उपमा - उत्प्रेक्षा में भेद →

(1) मन्ये शङ्के ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादयः। उत्प्रेक्षावाचकाः शब्दा इव शब्दोऽपि तादृशः।

अर्थात् मन्ये, शङ्के, ध्रुवं, प्रायः, नूनं उत्प्रेक्षा वाचक शब्द हैं। इनका प्रयोग उपमा में नहीं होता है। अतः जहाँ ये शब्द प्रयुक्त होते हैं वहाँ उत्प्रेक्षालंकार होता है।

(2) 'इव' शब्द उत्प्रेक्षा और उपमा दोनों का वाचक है। जहाँ क्रियापद में 'इव' शब्द संयोजित हो, वहाँ उत्प्रेक्षा होती है जैसे 'लिम्पतीव तमोऽङ्गानि'

→ प्रायशः जहाँ इव शब्द 'संज्ञा' के साथ जुड़ा हो, वहाँ उपमा अलङ्कार होता है जैसे 'असत्पुरुषसेवेव'

(3) जहाँ उत्प्रेक्षा वाचक 'इव' पद क्रिया पद से भिन्न किसी पद से जुड़ा हो, वहाँ उत्प्रेक्षा का निर्णय लक्षणानुसार होता है, क्योंकि उपमा का प्राण सादृश्य और उत्प्रेक्षा का प्राण सम्भावना है।

Sartel-80 Sartel-H 80 Sartel-AM80